भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एवं विभाजन

डॉ. रूद्र प्रताप सिंह

कांग्रेस की स्थापना उन ऐतिहासिक परिस्थितियों एवं घटनाओं की देन थी जो 19वीं सदी के द्वितीय अर्द्धभाग में हमारे देश में हो रही थी। लॉर्ड लिटन के अन्यायपूर्ण और दमनकारी शासन कार्यों ने इसकी विकास गति को और भी तीव्रता प्रदान की। अंग्रेज शासकों के अत्याचार, अनाचार, उत्पीड़न एवं शोषण के फलस्वरूप भारतवासियों के दिलों में उठी असन्तोष की लहरों में ज्वार आ गया। देश में राष्ट्रीय जागृति एवं राजनीतिक चेतना एक देशव्यापी संस्थात्मक रूप लेने को मचल उठी। इन्हीं परिस्थितियों के फलस्वरूप 1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

भारत में राष्ट्रीय जागृति के उद्‌भव एवं विकास के इतिहास का अध्ययन हमें ज्ञात कराता है कि 1883 ई० के अन्त तक भारत के राजनीतिक विकास एवं ब्रिटिश शासन के विरूद्ध जाग्रत भावनाओं के प्रदर्शन के लिए एक देशव्यापी संगठन की अनुपस्थिति हमारे राष्ट्रवादी नेताओं को खलने लगी थी। उस काल के अनेक प्रान्तीय संस्थाएँ प्रस्तावित देशव्यापी जन–आन्दोलन के लिए सर्वथा अनुपयुक्त थी। अतः तत्कालीन भारतीय नेतागण एक ऐसी राष्ट्रीय सभा की स्थापना की उधेड़बुन में थे, जो समूचे देश की व्यापक राजनीति को अपनी परिधि में ला सके।